IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 1 of 43 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

एमएसओ-001

(हिन्दी माध्यम)

FROM PREVIOUS YEAR PAPER's

IMPORTANT QUESTION ANSWER's

Guess Paper / Exam Notes

By India's No.1 - Mother Publication

FOR MORE PDF 9485943709

Disclaimer for Guess / Sample Paper By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905: -

This PDF contains sample papers compiled from previous years' questions of the IGNOU It is intended to provide you with a general idea of the paper format and may cover some potential questions. However, it is important to note the following:

1. **No Guarantee of Exam Questions:** We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.
2. **Book Study Recommended:** To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.
3. **Use as a Study Aid:** Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.
4. **Self-Responsibility:** Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

We wish you the best of luck with your IGNOU exams. Thank you for using this sample paper as part of your preparation. **By MOTHER NOTES- 8529719732, 99922-90905**

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 2 of 43 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

खंड—I

20 अंकों के प्रश्न - प्रत्येक 500-600 शब्द

प्रश्न - मार्क्स के अधिशेष मूल्य के सिद्धांत की व्याख्या करें।

उत्तर- कार्ल मार्क्स की सरप्लस वैल्यू की थ्योरी, पॉलिटिकल इकॉनमी की उनकी आलोचना में मुख्य कॉन्सेप्ट में से एक है। यह कैपिटलिस्ट शोषण और कैपिटलिस्ट प्रोडक्शन के डायनामिक्स के उनके एनालिसिस का आधार है। मार्क्स ने *दास कैपिटल में यह थ्योरी* यह समझाने के लिए पेश की कि कैपिटलिस्ट लेबर का शोषण करके कैसे प्रॉफिट कमाते हैं। यह थ्योरी लेबर पावर और लेबर, कमोडिटीज़ की वैल्यू और सरप्लस वैल्यू निकालने के बीच के अंतर पर आधारित है।

श्रम और मूल्य

मार्क्स के अनुसार, किसी चीज़ की कीमत उसके प्रोडक्शन के लिए ज़रूरी सामाजिक लेबर टाइम से तय होती है। लेबर ही सारी वैल्यू का सोर्स है। लेकिन, लेबर पावर—मज़दूर की काम करने की क्षमता—खुद कैपिटलिज़्म के तहत एक चीज़ है। मज़दूर अपनी लेबर पावर मज़दूरी के लिए कैपिटलिस्ट को बेचते हैं। मज़दूरी वह वैल्यू दिखाती है जो मज़दूर की ज़िंदगी को बनाए रखने और उन्हें काम करते रहने देने के लिए ज़रूरी है, यानी लेबर पावर की वैल्यू। ज़रूरी बात यह है कि एक मज़दूर एक दिन में जो वैल्यू बनाता है, वह उसकी मज़दूरी की वैल्यू से ज़्यादा होती है।

अधिशेष मूल्य का सृजन

मार्क्स **ज़रूरी लेबर** और **सरप्लस लेबर में फ़र्क करते हैं**। ज़रूरी लेबर काम के दिन का वह हिस्सा है जिसमें एक मज़दूर अपनी मज़दूरी के बराबर वैल्यू बनाता है। सरप्लस लेबर उस हिस्से से ज़्यादा की गई मेहनत है, जो कैपिटलिस्ट के लिए सरप्लस वैल्यू बनाता है। उदाहरण के लिए, अगर कोई मज़दूर एक दिन में 100 यूनिट का सामान बनाता है, लेकिन उसकी मज़दूरी सिर्फ़ 40 यूनिट वैल्यू के बराबर है, तो बाकी 60 यूनिट सरप्लस वैल्यू बनती हैं, जिसे कैपिटलिस्ट हड़प लेता है।

अधिशेष मूल्य के रूप

मार्क्स दो मुख्य तरीके बताते हैं जिनसे कैपिटलिस्ट सरप्लस वैल्यू बढ़ाते हैं: **एब्सोल्यूट सरप्लस वैल्यू** और **रिलेटिव सरप्लस वैल्यू**। एब्सोल्यूट सरप्लस वैल्यू काम का दिन बढ़ाकर हासिल की जाती है। मज़दूरों से बिना मज़दूरी बढ़ाए ज़्यादा समय तक काम करवाकर, कैपिटलिस्ट ज़्यादा सरप्लस लेबर निकालता है। रिलेटिव सरप्लस वैल्यू लेबर प्रोडक्टिविटी बढ़ाकर बनाई जाती है, जो अक्सर टेक्नोलॉजिकल तरक्की या बेहतर काम के ऑर्गनाइज़ेशन से होती है। अगर मज़दूर उतने ही समय में ज़्यादा वैल्यू बनाते हैं, तो ज़रूरी लेबर के मुकाबले सरप्लस लेबर का हिस्सा बढ़ जाता है, जिससे काम का दिन बढ़ाए बिना सरप्लस वैल्यू बढ़ जाती है।

पूंजीवाद में शोषण

FOR MORE PDF 9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 3 of 43 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

सरप्लस वैल्यू की थ्योरी कैपिटलिज़्म के शोषण करने वाले नेचर को दिखाती है। मज़दूरों को सिर्फ़ उनकी मेहनत की कीमत के बराबर मज़दूरी मिलती है, जबकि कैपिटलिस्ट बनाई गई एक्स्ट्रा वैल्यू को हड़प लेते हैं। यह शोषण सिस्टेमैटिक होता है और कैपिटलिस्ट प्रॉफ़िट का आधार बनता है। मार्क्स का कहना है कि यह स्ट्रक्चरल असमानता क्लास कॉन्फ़्लिक्ट की ओर ले जाती है, क्योंकि कैपिटलिस्ट क्लास और मज़दूर क्लास के हित असल में एक-दूसरे के उलटे होते हैं।

सिद्धांत का महत्व

मार्क्स की सरप्लस वैल्यू की थ्योरी इस बात की एक ज़रूरी व्याख्या देती है कि कैपिटलिस्ट अर्थव्यवस्थाओं में मुनाफ़ा कैसे पैदा होता है। यह इस क्लासिकल आर्थिक सोच को चुनौती देती है कि मुनाफ़ा सिर्फ़ व्यापार या कैपिटल इन्वेस्टमेंट से होता है। इसके बजाय, मुनाफ़ा बिना पैसे के मेहनत करने से होता है, जिससे शोषण कैपिटलिस्ट सिस्टम का मुख्य हिस्सा बन जाता है। यह थ्योरी मार्क्स की कैपिटलिज़्म की बड़ी आलोचना और बिना क्लास वाले समाज के उनके नज़रिए के लिए भी आधार तैयार करती है।

प्रश्न - यशायाह बर्लिन के लेखन के संदर्भ में 'नेगेटिव लिबर्टी' के कॉन्सेप्ट को समझाएं।

उत्तर- 20वीं सदी के सबसे असरदार पॉलिटिकल फिलॉसफर में से एक, आइज़ाया बर्लिन, **"नेगेटिव" और "पॉज़िटिव" लिबर्टी के बीच के फ़र्क के लिए बहुत जाने जाते हैं**। अपने खास लेख, *टू कॉन्सेप्ट्स ऑफ़ लिबर्टी* (1958) में, बर्लिन नेगेटिव लिबर्टी के आइडिया के बारे में डिटेल में बताते हैं, जो तब से लिबरल पॉलिटिकल सोच का आधार बन गया है।

नेगेटिव लिबर्टी की परिभाषा

बर्लिन के अनुसार, नेगेटिव लिबर्टी का मतलब है किसी व्यक्ति के कामों में दूसरों, खासकर सरकार की तरफ से कोई **बाहरी रोक या दखल न होना। दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति को तब तक आज़ाद माना जाता है जब तक कोई उसकी पसंद को रोकता या रुकावट नहीं डालता। यह आज़ादी के लिए ज़रूरी शर्त के तौर पर दखल न देने पर ध्यान देता है**। बर्लिन इस बात पर ज़ोर देते हैं कि नेगेटिव लिबर्टी का किसी व्यक्ति की काबिलियत, इच्छाओं या समझदारी से जुड़ी काबिलियत से कोई लेना-देना नहीं है; यह पूरी तरह से उस जगह के बारे में है जहाँ कोई बिना किसी रुकावट के काम कर सकता है।

नेगेटिव लिबर्टी की मुख्य विशेषताएं

1. **दखलंदाज़ी से आज़ादी:** नेगेटिव लिबर्टी का मुख्य सिद्धांत यह है कि लोगों को ज़बरदस्ती, ज़ुल्म या मनमानी अथॉरिटी से आज़ाद होना चाहिए। उदाहरण के लिए, ऐसे कानून जो किसी को अपनी राय बताने या अपने धर्म को मानने से रोकते हैं, उनकी नेगेटिव लिबर्टी का उल्लंघन करते हैं।
2. **बाहरी रुकावटें:** बर्लिन इस बात पर ज़ोर देते हैं कि आज़ादी सिर्फ़ बाहरी रुकावटों से ही सीमित होती है, न कि अपनी कमज़ोरियों या रिसोर्स की कमी से। बोलने की आज़ादी तब भी मायने रखती है, जब किसी व्यक्ति में अपने विचारों को अच्छे से कहने का हुनर न हो; ज़रूरी यह है कि समाज उन्हें बोलने से न रोके।
3. **आज़ादी का इंपर्सनल नेचर:** नेगेटिव आज़ादी मुख्य रूप से **व्यक्ति और समाज या अथॉरिटी के बीच के रिश्ते से जुड़ी होती है, न कि खुद पर काबू पाने या पर्सनल डेवलपमेंट से। यह आज़ादी को दूसरों द्वारा तय की गई सीमाओं** के हिसाब से बताती है , न कि अंदरूनी सेल्फ-फुलफिलमेंट के हिसाब से।

नेगेटिव लिबर्टी के उदाहरण इसका

एक क्लासिक उदाहरण है आने-जाने की आज़ादी। अगर कोई सरकार या व्यक्ति किसी को घूमने-फिरने से फिजिकली नहीं रोकता है, तो उस व्यक्ति को नेगेटिव लिबर्टी मिलती है। इसी तरह, एक लिबरल डेमोक्रेसी में, नागरिकों को नेगेटिव लिबर्टी तब मिलती है जब वे कानूनी तौर पर सरकार के दखल के बिना चुनाव में हिस्सा लेने, बोलने या इकट्ठा होने के लिए आज़ाद होते हैं।

महत्व और मतलब

बर्लिन का तर्क है कि लोगों को तानाशाही और अत्याचार से बचाने के लिए नेगेटिव लिबर्टी ज़रूरी है। राज्य और दूसरों की शक्ति को सीमित करके, नेगेटिव लिबर्टी व्यक्तिगत आज़ादी और नागरिक स्वतंत्रता के लिए एक ढांचा देती है। यह आधुनिक उदारवादी सोच का आधार है, जिसमें बोलने, धर्म और इकट्ठा होने की आज़ादी की संवैधानिक गारंटी शामिल है।

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 4 of 43 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

क्रिटिकल ऑब्ज़र्वेशन:

बर्लिन नेगेटिव लिबर्टी की क्लैरिटी की तारीफ़ करते हैं, लेकिन वे चेतावनी देते हैं कि इसका **गलत मतलब निकाला जा सकता है या इसे ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर बताया जा सकता है**। नॉन-इंटरफेरेंस पर सिर्फ़ फ़ोकस करने से सोशल, इकोनॉमिक और स्ट्रक्चरल इनइक्वालिटीज़ को नज़रअंदाज़ किया जा सकता है जो असली आज़ादी में रुकावट डालती हैं। इस क्रिटिक ने पॉज़िटिव लिबर्टी पर चर्चा का रास्ता बनाया, जो सेल्फ़-रियलाइज़ेशन और अपने सच्चे फ़ायदे के लिए काम करने की काबिलियत पर ज़ोर देती है।

आखिर में, आइज़ाया बर्लिन का नेगेटिव लिबर्टी का कॉन्सेप्ट पॉलिटिकल फिलॉसफी में एक बुनियादी आइडिया है। आज़ादी को **बाहरी रुकावटों की गैर-मौजूदगी के तौर पर बताते हुए** , बर्लिन ज़बरदस्ती को कम करने और व्यक्तिगत आज़ादी की रक्षा करने के महत्व पर ज़ोर देते हैं। हालांकि इसकी कोई सीमा नहीं है, फिर भी नेगेटिव लिबर्टी एक आज़ाद समाज के लिए ज़रूरी अधिकारों और सुरक्षा को समझने के लिए बहुत ज़रूरी है।

ALL SOLVED ASSIGNMENT, GUESS PAPER, PROJECT - HAND WRITTEN SCAN PDF, HARDCOPY BY POST ORDER- ON WHATSAPP MSG- 8529719732, 99922-90905 OR VISIT- motherpublication.in / mothernotes.in

प्रश्न - लेवी-स्ट्रॉस के सामाजिक संबंधों के विचार पर चर्चा करें।

उत्तर- क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस, फ्रेंच एंथ्रोपोलॉजिस्ट और एथनोलॉजिस्ट, को बड़े पैमाने पर स्ट्रक्चरल एंथ्रोपोलॉजी का फाउंडर माना जाता है। उनके काम ने सिर्फ देखे जा सकने वाले व्यवहारों को बताने के बजाय, इंसानी समाज और सामाजिक संबंधों को चलाने वाले अंदरूनी स्ट्रक्चर को समझने पर ज़ोर दिया। लेवी-स्ट्रॉस का सामाजिक संबंधों का विचार उनके स्ट्रक्चरलिस्ट अप्रोच में गहराई से जुड़ा है, जो बाइनरी विरोधों और सोच के यूनिवर्सल पैटर्न के ज़रिए इंसानी मन और संस्कृति का एनालिसिस करता है।

लेवी-स्ट्रॉस की सोशल रिलेशन की समझ के मूल में **किंशिप सिस्टम का कॉन्सेप्ट है**। उन्होंने तर्क दिया कि किंशिप एक बुनियादी फ्रेमवर्क है जिसके ज़रिए इंसान अपनी सोशल दुनिया को ऑर्गनाइज़ करते हैं। किंशिप के नियम, खासकर शादी, वंश और अलायंस को कंट्रोल करने वाले, मनमाने नहीं होते बल्कि इंसानी सोच की गहरी बनावट को दिखाते हैं। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि ये नियम रिश्ते बनाने, व्यवहार को रेगुलेट करने और कम्युनिटी के अंदर सोशल तालमेल पक्का करने का काम करते हैं। उदाहरण के लिए, शादी एक ज़रूरी सोशल इंस्टीट्यूशन है जो अलग-अलग किंशिप ग्रुप को जोड़ता है, ऐसे अलायंस बनाता है जो सोशल नेटवर्क को बढ़ाते हैं और सोशल बैलेंस बनाए रखते हैं।

लेवी-स्ट्रॉस ने **"अलायंस थ्योरी" पेश की** , जिसने वंश-आधारित स्ट्रक्चर (जैसे परिवार का वंश) से फोकस हटाकर सामाजिक रिश्ते बनाने में लेन-देन के महत्व पर ला दिया। इस थ्योरी के अनुसार, सामाजिक संबंध मुख्य रूप से रिश्तेदारों के बीच शादी में महिलाओं के लेन-देन से बनते हैं। यह "पारस्परिक लेन-देन" गठबंधन बनाने, झगड़ों को सुलझाने और समुदायों को जोड़ने के लिए बहुत ज़रूरी है। यह थ्योरी इस बात पर ज़ोर देती है कि सामाजिक रिश्ते सिर्फ़ निजी या भावनात्मक संबंध नहीं होते, बल्कि वे स्ट्रक्चरल तरीके भी होते हैं जो सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखते हैं।

बाइनरी अपोज़िशन का कॉन्सेप्ट है। उनका मानना था कि इंसानी सोच कच्चा/पका हुआ, नेचर/कल्चर, और मेल/फीमेल जैसे कंट्रास्ट के ज़रिए काम करती है। ये अपोज़िशन मिथकों, रीति-रिवाजों और कल्चरल प्रैक्टिस में दिखते हैं, जिसमें सोशल ऑर्गनाइज़ेशन भी शामिल है। इन उलटी बातों का एनालिसिस करके, लेवी-स्ट्रॉस ने दिखाया कि सोशल रिलेशन सिंबॉलिक स्ट्रक्चर में जुड़े होते हैं, जो सोच, नॉर्म और इंटरैक्शन को आकार देते हैं। मन सोशल लाइफ को रिश्तों और अंतरों के हिसाब से कैटेगरी में बांटता है, और ऐसे पैटर्न को हाईलाइट करता है जो सभी कल्चर में यूनिवर्सल हैं।

इसके अलावा, लेवी-स्ट्रॉस ने **पौराणिक कथाओं और सांस्कृतिक कहानियों को** सामाजिक संबंधों की अभिव्यक्ति के तौर पर देखा। उनके अनुसार, मिथक सामाजिक नियमों और सामूहिक ज्ञान को दर्शाते हैं, जो बातचीत और झगड़े सुलझाने के लिए मॉडल देते हैं। मिथकों का

FOR MORE PDF 9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU "MOTHER PUBLICATION" All PDF BUY ON WHATSAPP MSG- 9485943709
Page 5 of 43 Pages in this Full pdf
THIS IS COPYRIGHT PDF DO NOT SELL OR SHARE TO ANYONE- OTHERWISE LEGAL ACTION TAKEN

तुलनात्मक अध्ययन करके, उन्होंने दिखाया कि सांस्कृतिक विविधता के बावजूद, अंदरूनी सामाजिक ढांचे अक्सर एक जैसे पैटर्न को फॉलो करते हैं, जिससे इंसानी समाजों का यूनिवर्सल लॉजिक पता चलता है।

आखिर में, लेवी-स्ट्रॉस का सोशल रिलेशन का आइडिया इस बात पर ज़ोर देता है कि इंसानी बातचीत स्ट्रक्चर्ड, पैटर्न वाली होती है, और रिश्तेदारी और सिंबॉलिक लॉजिक दोनों में गहराई से जुड़ी होती है। सोशल बॉन्ड, खासकर शादी और अलायंस के ज़रिए, समाज में स्थिरता बनाए रखने के लिए बहुत ज़रूरी हैं। उनके स्ट्रक्चरलिस्ट अप्रोच ने समाज की स्टडी को देखने लायक बिहेवियर से हटाकर इंसानी रिश्तों को कंट्रोल करने वाले अंदरूनी मेंटल फ्रेमवर्क और यूनिवर्सल प्रिंसिपल्स की ओर मोड़ दिया। इस तरह, लेवी-स्ट्रॉस के लिए, सोशल रिलेशन को समझने के लिए उन छिपे हुए स्ट्रक्चर्स की जांच करना ज़रूरी है जो इंसानी सोच, कल्चर और सोशल ऑर्गनाइज़ेशन को बनाते हैं।

प्रश्न - क्या वास्तविकता सामाजिक रूप से निर्मित है? बर्जर और लकमैन के दृष्टिकोण के संदर्भ में चर्चा करें।

उत्तर- क्या वास्तविकता सामाजिक रूप से निर्मित है? – बर्जर और **लकमैन का नज़रिया**

सोशियोलॉजी और फिलॉसफी में रियलिटी के कॉन्सेप्ट पर लंबे समय से बहस होती रही है। एक असरदार नज़रिया यह है कि रियलिटी **सोशली कंस्ट्रक्टेड होती है** , जिसका मतलब है कि दुनिया के बारे में हमारी समझ सिर्फ़ ऑब्जेक्टिव फैक्ट्स से नहीं बल्कि सोशल प्रोसेस, इंटरैक्शन और शेयर्ड मतलबों से बनती है। पीटर एल. बर्जर और थॉमस लकमैन ने अपनी खास किताब *'द सोशल कंस्ट्रक्शन ऑफ़ रियलिटी' (1966)* में इस आइडिया को समझने के लिए एक सिस्टमैटिक फ्रेमवर्क दिया है।

बर्जर और लकमैन का तर्क है कि असलियत पूरी तरह से ऑब्जेक्टिव या इंसानी सोच से अलग नहीं है। इसके बजाय, असलियत **सोशल इंटरैक्शन से बनती, बनी रहती और बदलती है**। वे असलियत के दो रूपों में फ़र्क करते हैं: **ऑब्जेक्टिव असलियत** जो इंसानों से अलग होती है और **सब्जेक्टिव असलियत** जिसे लोग अनुभव करते हैं और समझते हैं। सोशल असलियत तब सामने आती है जब लोग मिलकर मतलब तय करते हैं और उन्हें इंस्टीट्यूशनल बनाते हैं, जिससे वे "नेचुरल" और बिना सवाल के लगते हैं। उदाहरण के लिए, पैसा, शादी या शिक्षा जैसे कॉन्सेप्ट अपनी अंदरूनी खूबियों की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए अहमियत पाते हैं क्योंकि समाज मिलकर उनके मतलब और कामों पर सहमत होता है।

लकमैन के अनुसार, सामाजिक निर्माण की प्रक्रिया तीन परस्पर संबंधित चरणों के माध्यम से होती है: **बाह्यीकरण, वस्तुकरण और आंतरिककरण**।

1. **एक्सटर्नलाइज़ेशन** का मतलब है वह क्रिएटिव प्रोसेस जिससे इंसान अपने विचारों, आइडिया और कामों को दुनिया में दिखाते हैं। कम्युनिकेशन, लिखने और कल्चरल प्रोडक्शन जैसी एक्टिविटी के ज़रिए, लोग अपने माहौल और सोशल प्रैक्टिस को आकार देते हैं।
2. **ऑब्जेक्टिवेशन** तब होता है जब इंसानों के बनाए ये नियम और संस्थाएं अपनी एक अलग सच्चाई बन जाती हैं। वे बनाने वालों के कंट्रोल से आज़ाद हो जाते हैं, और एक ऐसा अस्तित्व पा लेते हैं जो ऑब्जेक्टिव और खुद-ब-खुद साफ़ लगता है। उदाहरण के लिए, कानूनी सिस्टम, धार्मिक सिद्धांत, या सामाजिक भूमिकाएं ऑब्जेक्टिव सच्चाई के तौर पर दिखाई देती हैं जो व्यवहार को गाइड करती हैं, भले ही वे इंसानों के आपसी संपर्क से पैदा हुई हों।
3. **इंटरनलाइज़ेशन** वह प्रोसेस है जिससे लोग समाज में बनी इन सच्चाइयों को सीखते और मानते हैं। सोशलाइज़ेशन के ज़रिए, लोग नॉर्म्स, वैल्यूज़ और उम्मीदों को अपने अंदर अपना लेते हैं, और उन्हें अपने नज़रिए का हिस्सा बना लेते हैं। यह इंटरनलाइज़ेशन यह पक्का करता है कि सोशल स्ट्रक्चर पीढ़ियों तक बने रहें।

बर्जर और लकमैन इस बात पर ज़ोर देते हैं कि बनाने और समझने का यह साइकिल **लगातार और डायनैमिक है**। असलियत फिक्स नहीं है; यह सोशल इंटरैक्शन और कल्चरल मतलब बदलने के साथ बदलती है। सोशल संस्थाएं, नियम और नॉलेज सिस्टम तभी तक बने रहते हैं जब तक लोग मिलकर उन्हें पहचानते और दोहराते हैं।

FOR MORE PDF-9485943709

All Full PDF- https://mothernotes.in/ - Previous year solved paper , Guess Paper.

IGNOU MOTHER PUBLICATION - ASSIGNMENTS & GUESS PAPERS & PYQ SOLVED PDF

INDIA'S NUMBER 1 STUDY MATERIAL PROVIDER

यह केवल एक सैंपल पीडीएफ है।

यह केवल Sample PDF है। पूरी Solved Assignment या Guess Paper PDF खरीदने के लिए हमारी वेबसाइट पर जाएँ

या

WhatsApp पर मैसेज करें।

WHATSAPP ONLY: +91 9485943709

WHATSAPP ONLY:: +91 9992290905

1. Solved Assignment Visit -:: https://motherpublication.in/

2. Pyq Solved Guess paper Visit:-: https://mothernotes.in/

Mother Publication • IGNOU Study Resources